Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

भारत में समावेशी शिक्षा पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव एवं महत्व का अध्ययन

भाग्य भटनागर
शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, लोदीपुर राजपूत, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
डॉ निकिता यादव
शोध निर्देशिका, शिक्षा विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, लोदीपुर राजपूत, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 127-134

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 05 April 2025
Published : 24 April 2025

सारांश

भारत में समावेशी शिक्षा के संरक्षण व संवर्धन के लिए ज्ञान परंपराओं का ज्ञान अति आवश्यक हैं। भारत, ज्ञान और परंपरा यह तीनों शब्द मात्र शब्द नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय के भाव हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी समावेशी शिक्षा को महत्वपूर्ण बताते हुए शिक्षा क्षेत्र के सभी स्तरों पर छात्रों का समावेश कर मुख्यधारा में शामिल कर अपने पर बल दिया जाता हैं। अतः समावेशी शिक्षा के माध्यम से छात्र–छात्राएं न केवल अपने–अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहार की ओर बढ़ेंगे बल्कि भविष्य के प्रति प्रसन्नचित होंगें। भारतीय मूल्यों एवं सामाजिक परिवेश के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यंत आवश्यक हैं। समावेशी शिक्षा में एकसमान व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा को बिना लिए नहीं चल सकती है, क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता की तरफ दौड़ रहे है, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति ज्ञान–विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं। भारत की सभ्यता और ज्ञान विश्व पटल पर सबसे पुरातन और सर्वश्रेष्ठ ज्ञान हैं। भारत के पुरातन ज्ञान को नूतन संदर्भ में शिक्षा में समावेश करने की आवश्यकता हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का जो दृष्टिकोण रहा है, वह समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा में प्रत्येक व्यक्ति के विकास, सामाजिक समानता और सामाजिक सशक्तिकरण की संकल्पना को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जो समावेशी शिक्षा की भावना से मूल रूप से जुड़ा हुआ हैं। प्राचीन भारत में गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से प्राचीन ज्ञान को जन–जन तक पहुंचाया जाता था, जो एक तरह से समावेशी शिक्षा का ही अमूर्त रूप था। इस शोध पत्र के माध्यम से हम भारत में समावेशी शिक्षा पर भारतीय ज्ञान परंपरा का क्या प्रभाव रहा हैं और उसके महत्व को जानने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द :– संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा, असमानता, समावेशी शिक्षा ।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

प्रस्तावना

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य समाज के समस्त वर्गों, धर्मों और जातियों को शामिल करना है, जो कि किन्हीं कारणों से शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, क्योंकि समावेशी शिक्षा भी उन्हीं व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करने की कोशिश करती है,जो समाज में पिछड़े हुए हैं। यह परंपरा प्रत्येक छात्र–छात्राओं की आवश्यकताओं और विशेषताओं के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान करती हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत में हमारे वैदिक शिक्षा को दर्शाती है तथा आधुनिक युग में हमें प्राचीन परंपराओं को पुनर्जीवित करने के साथ–साथ समाज में समावेशी शिक्षा को ग्रहण करने में एक अहम भूमिका निभाती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा के प्रति जो दृष्टिकोण रहा है, वह समावेशी शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति का विकास, सामाजिक समानता और सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणाओं को अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जो की समावेशी शिक्षा की धारणाओं और सिद्धांतों से जुड़ा हुआ हैं। समावेशी शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान किया जाता हैं। समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि यह शिक्षा को सभी वर्गों एवं समुदायों तक पहुंचाने में सहायक होती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा जो कई हजार वर्षों से चली आ रही है, जिसमें कुछ ऐसे मूल्य और दृष्टिकोण शामिल है, जो कि प्रत्येक समाज के प्रत्येक हिस्से को समान अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरित करने पर बल देते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1– समावेशी शिक्षा के बारे में अध्ययन करना।

2– समावेशी शिक्षा की आवश्यकताओं और महत्व का अध्ययन करना।

3–समावेशी शिक्षा को लागू करने में भारत सरकार की भूमिका का अध्ययन करना।

4– स्कूल में समावेशी शिक्षा को लागू करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका का अध्ययन करना।

5– समावेशी शिक्षा को लागू करने में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।

समावेशी शिक्षा का परिचय

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्गों, विशेषकर उन व्यक्तियों को, जो किसी भी कारण से शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, उन सभी व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करना हैं। समावेशी शिक्षा के माध्यम से छात्रों को उनकी क्षमताओं और विशेषताओं के आधार पर एक अनुकूलित शिक्षा का वातावरण तैयार करने में सहायता प्रदान करना हैं। समावेशी शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो शिक्षा के पारंपरिक ढांचे से बाहर जाकर सभी छात्रों को समान अवसर और सामान वातावरण प्रदान करने में सहायता करती हैं। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य समाज के पिछड़े वर्गों (जैसें :– विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, पिछड़े वर्ग एवं अल्पसंख्यक आदि) को मुख्य धारा में लाकर समाहित करना

हैं। समावेशी शिक्षा में न केवल शिक्षा की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है, अपितु छात्र–छात्राओं की विविधताओं और उनकी विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना भी अति आवश्यक हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परम्परा शिक्षा मंत्रालय (एमओई) के तहत भारत सरकार का एक अभिनव प्रकोष्ठ है। इसे सामाजिक अनुप्रयोगों के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2020 में स्थापित किया गया है। आईकेएस का मुख्य उद्देश्य कला, कृषि, बुनियादी विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, प्रबंधन, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्रों में भारत की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान का प्रसार करना है। आईकेएस हमारी पुरानी ज्ञान प्रणाली को फिर से जीवंत करता है और इसे हमारी शिक्षा प्रणाली के ताने–बाने में एकीकृत करके इसे मुख्यधारा में लाता है। आईकेएस भारत की प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच एक सेतु का काम कर सकता है। यह हमारी नई पीढ़ी के विद्वानों को हमारे और दुनिया के लिए ज्ञान सृजन के भारतीय प्रतिमान के आधार पर समाज के नए विकास के बारे में बताने में भी मदद कर सकता है। आईकेएस प्रभाग के मुख्य सिद्धांत 1– परंपरा 2– दृष्टि 3– लौकिक–प्रयोजन।

1- परंपरा :– शिक्षकों की वंशावली के माध्यम से हमारी समृद्ध विरासत और दुनिया को पारंपरिक संचरण ज्ञान प्रणाली को समझना। इसमें पाठ्य ज्ञान और प्रदर्शनात्मक ज्ञान दोनों शामिल हैं, जिसका उद्देश्य "पुरुषार्थ" (जीवन का शिष्य), गुरु परम्परा विकसित करना हैरू जो उस ज्ञान की सुरक्षा, संरक्षण और संवर्धन के लिए जिम्मेदार हैं।

2- दृष्टि :– भारतीय दृष्टि भारत की प्राचीन ज्ञान प्रणाली और संस्कृति में गहराई से निहित है। दृष्टि प्राचीन भारतीय ज्ञान और भारत की अनूठी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के लेंस द्वारा दुनिया के लिए आधुनिक मार्ग को शामिल करती है। दृष्टि भारत की प्राचीन ज्ञान प्रणाली द्वारा आधुनिक समस्या को हल करने का विशिष्ट दृ ष्टिकोण है।

3- लौकिक–प्रयोजन :– लौकिक भारत और विश्व की वर्तमान और उभरती समस्याओं को संबोधित करती है। लौकिक मानव जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है। लौकिक प्रयोजन मुख्य रूप से स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी, सामाजिक कल्याण और सतत विकास पर केंद्रित है।

भारतीय सामाजिक संरचना और समावेशिता

भारतीय समाज हमेशा से विभिन्न विविधताओं से भरा हुआ हैं। यहां प्रत्येक वर्ग (जाति, धर्म, भाषा एवं क्षेत्र विविधताओं) के आधार पर जुड़ा हुआ है, क्योंकि भारतीय समाज में पुरानी परंपराओं को हमेशा से देखा गया है, जिसमें शिक्षा को सभी तक सुलभ एवं अधिकारों को सुरक्षित किया गया हैं। हालांकि, भारतीय समाज में कुछ वर्गों

को शिक्षा से वंचित रखा गया था, जैसें– दलित समाज और आदिवासी समाज । परंतु बदलते भारत के साथ, यह विचार भी विकसित हुआ, कि प्रत्येक वर्ग को शिक्षा का समान अधिकार मिलना चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से समाज को प्रत्येक वर्ग की भलाई की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, जो कि समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य भी कहता है, कि सभी को समान अवसर मिलें। भारतीय समाज के साथ–साथ भारतीय दर्शन में भी विभिन्नताओं का सम्मान किया गया है जैसें– भगवद गीता के माध्यम से पता चलता है, कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया था, कि प्रत्येक व्यक्ति का मार्ग अलग है, अर्थात् सभी व्यक्ति अपने जीवन को अपने हिसाब से जीने की कोशिश करते हैं। एक व्यक्ति की जरूरत कोई वस्तु होती है, परंतु यह जरूरी नहीं कि दूसरे व्यक्ति को भी उसी वस्तु की आवश्यकता हो। भारत की सामाजिक संरचना में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता ने समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया हैं। भारतीय परंपराओं में यह सिखाया गया है, कि प्रत्येक वर्ग को उचित सम्मान एवं अवसर मिलना चाहिए चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या वर्ग से हो।

वेदों और उपनिषदों में समावेशिता का सिद्धांत

वेदों में शिक्षा को उत्कृष्ट साधन के रूप में दर्शाया गया है, जो न सिर्फ मानसिक विकास के साथ–साथ सामाजिक और नैतिक सिद्धांतों को भी स्थापित करने में सहायक होती हैं। वेदों में सर्वे भवंतु सकिना सर्वे संतु निरमाया सर्वे भद्राणि पश्यंतु मां कार्दशी दुख भागवत का अर्थ है, कि सभी मनुष्य हो, सभी बीमारियों से मुक्त रहें, सभी मनुष्य मंगलमय घटनाओं को देखें और किसी को कष्ट का सामना न करना पड़े। क्योंकि समावेशी शिक्षा का सामाजिक दृ ष्टिकोण हमें यह समझने में सहायता करता है, कि ईश्वर की सृष्टि में समस्त मानवता चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या पंथ की हो, परंतु प्रत्येक वर्ग को समान अवसर मिलना चाहिए। उपनिषदों में भी शिक्षा का लक्ष्य आत्मज्ञान है, और इसमें सबके साथ मिलकर चलने का विचार है। विशेषकर, उपनिषदों में 'आत्मा' या 'स्व' की अवधारणा सभी मनुष्यों के बीच समानता और एकता का संदेश देती है,जो कि समावेशी शिक्षा के सिद्धांत से मेल खाती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा हमेशा से विविधता,समानता और सहयोग करने के माध्यम से जानी जाती हैं। वेदों और उपनिषदों में शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान में वृद्धि और समग्र समाज की समृद्धि करना हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार, "शिक्षा केवल पुस्तक पढ़ने तक सीमित नहीं है, अपितु यह व्यक्तिगत विकास और समग्र सामाजिक सुधार के लिए भी आवश्यक हैं।" भारतीय ज्ञान परंपरा का दृष्टिकोण भी समावेशी सिद्धांतो से जुड़ा हुआ है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग को अपनी क्षमता के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान किया जाता हैं।

समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका

समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन ज्ञान परंपरा हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा समावेशी शिक्षा में कई तरीकों से योगदान कर सकती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका को कुछ बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैं।

1. सामाजिक न्याय और समानता :– भारतीय ज्ञान परंपरा में सामाजिक न्याय का बहुत योगदान रहा है, क्योंकि यह परंपरा सभी बच्चों को समान अवसर देना चाहती है, चाहे बच्चों की आर्थिक स्थिति, धर्म, जाति एवं विकलांगता जैसी भी हो। भारतीय दर्शन जैसें– कि वेदांत और जैन दर्शन में सभी जीवो के प्रति सामानता का सिद्धांत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, वैसे ही समावेशी शिक्षा में इस सिद्धांत को अपनाने पर बल दिया गया हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा सभी बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रही हैं।

2. संस्कारों और नैतिक मूल्यों की शिक्षा :– भारतीय ज्ञान परंपरा बच्चों को न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करती है,अपितु उनको नैतिक और सामाजिक मूल्यों की भी शिक्षा प्रदान करने में सहायता करती हैं। यह परंपरा बच्चों के अंदर मानवता, संस्कार और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना को जागृत करने का भी कार्य करती हैं। उदाहरण के लिए, जब किसी व्यक्ति का सड़क पर एक्सीडेंट हो जाता है तो हम मानवता के नाते उस व्यक्ति की सहायता करते हैं, न कि उसका परिचय लेकर कि वह किस जाति, धर्म या वर्ग का विभेदीकरण करते हुए उसको अकेला छोड़ देते हैं। जिस व्यक्ति का एक्सीडेंट हुआ हैं। हम हमेशा से उसकी सहायता करते हैं।

3. सांस्कृतिक विविधता का सम्मान :– भारत एक विविधतापूर्ण राष्ट्र हैं, जहां विभिन्न धर्म,जातियां,भाषाएं और संस्कृतियॉ एक साथ निवास करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य उद्देश्य सभी विविधताओं का सम्मान करना और सामाजिक एकता को बनाए रखना हैं। समावेशी शिक्षा में यह दृष्टिकोण बच्चों को विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और विभिन्नताओं को समझने और स्वीकार करने की दिशा में प्रेरित करना हैं।

चुनौतियां एवं सुधार की दिशा

भारतीय ज्ञान परंपरा में समावेशी शिक्षा को लागू करने में अनेक चुनौतियां देखी जा रही हैं। यह चुनौतियां न केवल शिक्षा नीति और उसके ढांचे से संबंधित है, अपितु सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताओं से भी जुड़ी हुई हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से हम इन चुनौतियों को विस्तारपूर्वक समझने का प्रयास करेंगे, जो कि निम्नलिखित हैं।

1. सामाजिक भेदभाव एवं असमानताएं **:–** भारतीय समाज में भेदभाव और जातिवाद का बहुत गहरा प्रभाव है समाज में विभिन्न वर्गों एवं जातियों से जुड़े व्यक्ति, महिलाएं और बच्चे अलग–अलग समूहों में विभाजित हो जाते हैं, जिससे समाज में समान व्यवस्था और समान शिक्षा के अवसरों की कमी देखने को मिलती हैं। लिंग भेदभाव भी बहुत बड़ी

चुनौती है, क्योंकि इस पिछड़ें समाज एवं प्राचीन परंपराओं को ध्यान में रखकर लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखने की कोशिश की जा रही है, जिसके कारण भी समाज में शिक्षा के अवसरों की कमी दिखाई पड़ती हैं।

2. विकलांगता और विशेष जरूरत वाले बच्चों के लिए संसाधनों की कमी **:—** समावेशी शिक्षा में भी सभी बच्चों को समान शिक्षा देना अति आवश्यक है, क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपरा सभी को एक साथ लेकर चलने का प्रयास करती हैं। परंतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बच्चों के लिए समुचित संसाधन और सुविधाओं का उपलब्ध न होने की वजह से शिक्षा के अवसर कम हो रहे हैं। इसका एक मूल कारण प्रशिक्षित विशेष शिक्षकों की भारी कमी भी हैं।

3. शिक्षा सामग्री और पाठ्यक्रम की कमी **:—** समावेशी शिक्षा में भी उपयोग होने वाली शिक्षा सामग्री और पाठ्यक्रम को सभी बच्चों की जरूरत के अनुरूप तैयार करवाना चाहिए। पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के दृष्टिकोण को समाहित करने में कठिनाई हो रही है, क्योंकि अधिकांश पाठ्यक्रम बच्चों की आवश्यकताओं पर खरे नहीं उतरते हैं, जिसके कारण भी भारतीय ज्ञान परंपरा को लागू करना चुनौतीपूर्ण हो रहा हैं।

4. आर्थिक संसाधनों की कमी **:—** समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा को लागू करने के लिए उचित आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता दिखाई पड़ती है, परंतु भारत सरकार के पास सीमित बजट और विशेष संसाधनों की कमी के कारण व्यवस्था करने में सरकार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपराओं का समावेशी व्यापक दृष्टिकोण हो सकता है, परंतु आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण भी इसे लागू करना बहुत चुनौती भरा हैं।

सुधार की दिशा

वर्तमान में, भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई तरीके के सुधार किया जा रहे हैं, चाहे वह शिक्षक प्रशिक्षण हो या शिक्षा सामग्री एवं पाठ्यक्रम समायोजन। परंतु भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना हैं, जो कि इन सभी चुनौतियों को दूर करके ही संभव हो सकता हैं।

1. **सभी को समान अवसर प्रदान करना** **:—** भारतीय ज्ञान प्रणाली में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'(सभी का भला हो) और "वसुधैव कुटुम्बकम" (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) जैसे सिद्धांत शिक्षा के हर क्षेत्र में समान अवसर और समावेशी दृ ष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। यह सभी छात्रों को एक साथ जोड़ने और भेदभाव को समाप्त करने में मदद करता है।

2. **स्थानीय ज्ञान और सांस्कृतिक ज्ञान को प्रोत्साहन :–** भारतीय ज्ञान प्रणाली में स्थानीय, सांस्कृतिक और पारंपरिक ज्ञान का आदान–प्रदान समावेशी शिक्षा का हिस्सा बन सकता है। यह छात्रों को अपनी जड़ों से जोड़ने और आत्मसम्मान बढ़ाने में सहायक है, जिससे वे शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।

3. **धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं को सम्मान देना :–** भारतीय समाज विविधता में बसा हुआ है, और भारतीय ज्ञान प्रणाली इस विविधता को सम्मान देती है। समावेशी शिक्षा में सभी धर्मों, जातियों और संस्कृतियों को सम्मान देकर उन्हें एक साथ लाया जा सकता है, जिससे हर छात्र को अपनी पहचान बनाए रखने का अवसर मिलता है।

4. **समाज में समानता और न्याय की भावना का संवर्धन :–** भारतीय शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं, बल्कि समाज में समानता और न्याय की भावना पैदा करना है। समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि हर व्यक्ति को अपनी क्षमता अनुसार विकास के समान अवसर मिलें।

निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है भारतीय ज्ञान परंपरा बच्चों को न केवल बौद्धिक ज्ञान देती है अपितु, उन्हें समाज में समानता और न्याय की भावना से भी परिपूर्ण करने का भी अवसर प्रदान करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को समावेशी शिक्षा में लागू करने के साथ–साथ न केवल शिक्षा का स्तर बढ़ेगा। अपितु, सामाजिक एकता और सामाजिक समरसता की भावना भी बच्चों के अंदर जागृत होगी। परंतु सबसे पहले इसके लिए यह आवश्यक है, कि नई शिक्षा नीति 2020 के कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के योगदानों को उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया जाए। इसके पश्चात समावेशी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा को लागू करने के दौरान सांस्कृतिक बाधाएं, सामाजिक बाधाएं, संरचनात्मक बाधाएं और विशेष आवश्यकता से जुड़ी जो समस्याएं आ रही है, उन समस्याओं को दूर करने के लिए सही कदम एवं दिशा–निर्देश के साथ–साथ, सही शिक्षा–नीति, सामाजिक मानसिकता, सरकारी और निजी क्षेत्र का सहयोग और सभी संसाधनों एवं सामूहिक प्रयासों के माध्यम से एकजुट होकर भारतीय ज्ञान परंपरा को समावेशी शिक्षा से जोड़कर वर्तमान भारत को एक भारत, श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार किया जा सकता हैं।

संदर्भ सूची

1. एनसीईआरटी। (2020)। समावेशी शिक्षारू भारतीय दृष्टिकोण। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
2. एनसीईआरटी। (2013)। समावेशी शिक्षा का बुनियादी ढांचा। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

3. मनोरंजन, स. (2015)। भारतीय समाज और शिक्षारू समावेशी दृष्टिकोण। भारतीय शिक्षा पत्रिका, 45(3), 113–125।
4. कृष्णन, एस. (2018)। भारतीय ज्ञान परंपरा और समावेशी शिक्षा का गठजोड़। भारतीय शैक्षिक दर्शन पत्रिका, 32(1), 45–56।
5. कुमार, वी. (2017)। भारत में समावेशी शिक्षा के सिद्धांत और उनके सांस्कृतिक प्रभाव। भारतीय सामाजिक विज्ञान शिक्षा पत्रिका, 40(4), 234–248।
6. सिंह, ए. (2021)। समावेशी शिक्षा और भारतीय सामाजिक संरचना। भारतीय समाजशास्त्र और शिक्षा पत्रिका, 39(2), 199–212।
7. जैन, स. (2016)। भारतीय ज्ञान परंपरा और समावेशी शिक्षा। भारतीय शैक्षिक अध्ययन पत्रिका, 28(2), 78–90।
8. गांधी, म. (2014)। समावेशी शिक्षा और भारतीय दर्शनरू एक सांस्कृतिक अध्ययन। गांधी अध्ययन पत्रिका, 22(1), 115–126।
9. पांडे, आर. (2019)। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समावेशितारू इतिहास और विकास। शैक्षिक विकास पत्रिका, 35(4), 149–160।
10. अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ (।प्)। (2020)। भारत में समावेशी शिक्षा के लिए मार्गदर्शन। शैक्षिक समीक्षा, 18(3), 34–42।
11. सिन्हा, पी. (2022)। भारतीय शिक्षा नीति और समावेशी दृष्टिकोण। भारतीय शिक्षा नीति पत्रिका, 40(2), 223–235।
12. शर्मा, आर. (2021)। समावेशी शिक्षा का भारतीय समाज में विकास और प्रभाव। भारतीय समाज और शिक्षा पत्रिका, 38(4), 186–199।